पाठ - 14

FRG412

अब्दुर्रहीम खानखाना

जो गरीब सों हित करैं, धनि रहीम वे लोग।

कहाँ सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ।।

जो लोग गरीबों का भला करते हंै वास्तव में वे ही धन्य हैं। कहाँ द्वारिका के राजा कृष्ण और कहाँ गरीब ब्राह्मण सुदामा। दोनों के बीच अमीरी-गरीबी का बहुत बड़ा अंतर था, फिर भी श्रीकृष्ण ने सुदामा से मित्रता की और उसका निर्वाह किया।

उक्त पंक्तियों की रचना महान कवि रहीम ने की। रहीम ने कविताओं व दोहों में नीति और व्यवहार पर बल दिया और समाज को आदर्श मार्ग दिखाया। उन्होंने काव्य के द्वारा जिस सामाजिक मर्यादा को प्रस्तुत किया वह आज भी अनुकरणीय है।

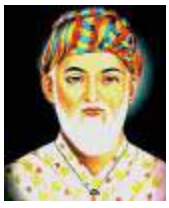

रहीम का जन्म लाहौर (जो अब पाकिस्तान में है) में 1556 ई0 में हुआ। इनके पिता बैरम खाँ हुमायूँ के अतिविश्वसनीय सरदारों में से एक थे। हुमायूँ की मृत्यु के बाद बैरम खाँ ने तेरह वर्षीय अकबर का राज्याभिषेक कर दिया तथा उनके संरक्षक बन गए। हज यात्रा के दौरान मुबारक लोहानी नामक एक अफगानी पठान ने बैरम खाँ की हत्या कर दी। रहीम उस समय मात्र पाँच वर्ष के थे। रहीम अपनी माँ के साथ अकबर के दरबार में पहुँचे।

अकबर ने रहीम के लालन-पालन की व्यवस्था राजकुमारों की तरह की। उन्होंने रहीम को 'मिर्जा खाँ' की उपाधि भी प्रदान की जो केवल राजकुमारों को दी जाती थी।

उन्होंने रहीम की शिक्षा के लिए मुल्ला अमीन को नियुक्त किया। रहीम ने मुल्ला अमीन से अरबी, फारसी, तुर्की, गणित, तर्कशास्त्र आदि का ज्ञान प्राप्त किया। अकबर ने रहीम के लिए संस्कृत अध्ययन की भी व्यवस्था की। बचपन से ही अकबर जैसे उदार व्यक्ति का संरक्षण प्राप्त होने के कारण रहीम में उदारता और दानशीलता के गुण भर गए।

रहीम को काव्य सृजन का गुण पैतृक परम्परा से प्राप्त हुआ था। इसके अतिरिक्त उन्हें राज्य संचालन, वीरता और दूरदर्शिता भी पैतृक रूप में मिली। मिर्जा खाँ रहीम की कार्य कुशलता, लगन और योग्यता देखकर अकबर ने उन्हें शासक वंश से जोड़ने का निश्चय किया। अकबर ने रहीम का विवाह माहमअनगा की बेटी तथा खानेजहाँ अजीज कोका की बहन से करा दिया।

सन् 1573 ई0 में मिर्जा खाँ रहीम का राजनीतिक जीवन आरंभ हुआ। अकबर गुजरात के विद्रोह को शान्त करने के लिए अपने कुछ विश्वसनीय सरदारों को लेकर गए थे। उनमें सत्रह वर्षीय मिर्जा खाँ भी थे। 1576 ई0 में अकबर ने उन्हें गुजरात का सूबेदार बनाया। 1580 तक मिर्जा खाँ ने राजा भगवानदास और कुँवर मानसिंह जैसे योग्य सेनापतियों की संगति में रहकर अपने अन्दर एक अच्छे सेनापति के गुणों को विकसित कर लिया। प्रधान सेनापति के रूप में उन्होंने बहुत लड़ाइयाँ जीतीं। 28 वर्ष की आयु में मिर्जा खाँ को अकबर ने 'खानखाना' की उपाधि प्रदान की। अब उनका नाम मिर्जा खाँ अब्दुर्रहीम खानखाना हो गया। 1589में अकबर ने उन्हें वकील की पदवी से सम्मानित किया। उनके पहले यह सम्मान केवल उनके पिता बैरम खाँ को प्राप्त हुआ था।

उच्च कोटि के सेनापति और राजनीतिज्ञ होने के साथ ही रहीम श्रेष्ठ कोटि के कवि भी थे। अकबर का शासन काल हिंदी साहित्य का स्वर्णकाल माना जाता है। इसी समय रहीम ने ब्रजभाषा, अवधी तथा खड़ी बोली में रचनाएँ की। उनकी प्रमुख रचनाएं रहीम सतसई, बरवै नायिका भेद, रास पंचाध्यायी, शृंगार सोरठा, मदनाष्टक तथा खेट कौतुक हैं।

रहीम समाज की कुरीतियों, आडम्बरों के भी आलोचक थे। वे मानवता के रचनाकार थे। उन्होंने धर्म, सम्प्रदाय से दूर रह कर राम रहीम को एक माना। रहीम ने राम, सरस्वती, गणेश, कृष्ण, सूर्य, शिव-पार्वती, हनुमान और गंगा की स्तुति की है। भाषा, धर्म-सम्प्रदाय में न उलझकर उन्होंने मानवधर्म को परम धर्म माना।

सन् 1605 ई0 में अकबर की मृत्यु के बाद उनके पुत्र जहाँगीर से रहीम की नहीं बनी। जहाँगीर ने राजद्रोह के अभियोग में उन्हें कैद करवा लिया। उनकी सारी सम्पत्ति पर कब्जा कर लिया। कैद से छूटने के बाद उन्हें गम्भीर आर्थिक संकटों से जूझना पड़ा। वह दुःखी होकर चित्रकूट चले आए। उन्होंने लिखा-

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध नरेस।

जा पर विपदा पड़त है, वहि आवत यहि देस।।

रहीम के अंतिम दिन बहुत ही संघर्षपूर्ण रहे। वह बीमार पड़ गए। उन्हें दिल्ली लाया गया जहाँ सन् 1628 में उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें हुमायूँ के मकबरे के सामने अपने ही द्वारा बनवाए गए अधूरे मकबरे में दफनाया गया। अब्दुर्रहीम खानखाना अपनी रचनाओं के कारण आज भी जीवित हंै। अकबर के नौ रत्नों में वे अकेले ऐसे रत्न थे जिनका कलम और तलवार पर समान अधिकार था। उन्होंने समाज के सामने 'सर्वधर्म समभाव' का अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया जो मानव मात्र के लिए ग्रहणीय है।

परिभाषिक शब्दावली

- खानखाना-खान का अर्थ है सरदार,
- खानखाना का अर्थ है सरदारों का सरदार।

अभ्यास

1. रहीम का जन्म कब हुआ था ?
2. रहीम की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।
3. रहीम को किन गुणों के कारण याद किया जाता है ?
4. रहीम को कौन-कौन सी उपाधियाँ प्राप्त थीं ?
4. सही विकल्प चुनिए-

रहीम -

क. उच्चकोटि के चित्रकार थे।

ख. उच्चकोटि के इतिहासकार थे।

ग. उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ और कवि थे।

घ. एक सूफी संत थे।

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

क. अकबर ने रहीम को ..... नामक उपाधि प्रदान की।

ख. रहीम ने ..... तथा खड़ी बोली में रचनाएँ की।

ग. रहीम ने समाज के सामने ..... का अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया।

योग्यता विस्तार:

पाठ में अकबर के नौ रत्नों का वर्णन आया है जिनमें से एक थे-अब्दुर्रहीम खानखाना। अन्य 8 के नाम नीचे लिखे हैं।

अकबर के नौरत्न -

1. बीरबल

2. तानसेन

3. टोडरमल

4. मानसिंह

5. अबुल फजल

6. अबुल फैजी

7. हकीम हुक्काम

8. मुल्ला दो प्याजा

- जानकारी कीजिए कि इन्हें किन गुणों के कारण नौ रत्न कहा जाता था?